MIMANSA - NON-EXISTENCE

मीमांसा - अनुपलब्धि ।

By- Dr. Arun Kumar Sinha
Asso. Professor, Philosophy Department
Raja Singh College, Siwan
(For Part- 1 Hons./Subs. Students)

नैयायिक और प्रभाकर अनुपलब्धि को प्रमाण नहीं मानते,लेकिन कुमारिल ने इसे स्वतंत्र प्रमाण माना है।किसी विषय के साक्षात ज्ञान हमें अनुपलब्धि द्वारा प्राप्त होता है। इस कोठरी में घडे का अभाव है ,इसका का ज्ञान कैसे होता है ? मीमांसा का कथन है की घडे के अभाव का ज्ञान अनुपलब्धि के द्वारा होता है। जिस प्रकार इस कोठरी में टेबल, कुर्सी आदि विषयों के विद्यमान होने का हमें साक्षात ज्ञान होता है,उसी प्रकार घड़े के अभाव का भी ज्ञान हो जाता है। टेबल कुर्सी अन्य विषयों के समान घड़े के अविद्यमान होने का भी हमें साक्षात ज्ञान हो जाता है। इस प्रकार अनुपलब्धि के द्वारा वस्तु के अभाव का साक्षात ज्ञान हो जाता है।

अनुपलब्धि को प्रत्यक्ष नहीं कहा जा सकता क्योंकि अभाव कोई ऐसी वस्तु नहीं है जिसका इन्द्रिय के साथ संपर्क हो सके।घड़े का आँख के साथ संयोग हो सकता है, घटाभाव का नहीं।

अनुपलब्धि अनुमान भी नहीं है। यदि ऐसा कहा जाए की घट का अभाव घट के अदर्शन से अनुमान किया जाता है तो यह संगत नहीं होगा। क्योंकि ऐसा अनुमान तभी संभव होता है जब हमें अनुपलब्धि और अभाव में व्याप्ति संबंध का ज्ञान रहता है कि जिस वस्तु का दर्शन नहीं होता उसका अभाव रहता है। परंतु यदि ऐसा मान लें तो आत्माश्रय दोष (Petitio Principii)उपस्थित हो जाएगा,क्योंकि जो सिद्ध करना है उसे हम पहले ही मान लेते हैं।

इसे शब्द और उपमान के द्वारा भी नहीं जाना जा सकता क्योंकि आप्त वाक्य अथवा सादृश्य ज्ञान की कोई आवश्यकता नहीं पड़ती।इस प्रकार घटाभाव(यहाँ घड़ा नहीं है)का जो साक्षात ज्ञान हमें होता है उसकी उपपत्ती करने के लिए हमें स्वतंत्र प्रमाण मानना होगा।